>

Title: Need to re-open Korba Fertilizers Factory in Korba, Chhattisgarh-Laid.

*m01

डॉ. चरण दास महन्त (कोरबा): कोरबा खाद परियोजना का कार्य सन 1962 में आरंभ किया गया था, किंतु दुर्भाग्यवश ज्यों ही कार्य आरंभ हुआ इस परियोजना को बंद कर दिया गया। तत्पश्चात कोरबा खाद परियोजना का कार्य सन 1973 में पुनः आरंभ हुआ। यह परियोजना कोयले पर आधारित थी एवं इसकी क्षमता 900 टन प्रतिदिन अमोनिया एवं 1500 टन प्रतिदिन यूरिया निर्धारित की गई थी। कोरबा उर्वरक संयंत्र की टेक्नोलॉजी एवं उत्पादन क्षमता रामागुण्डम (आंध्र प्रदेश) एवं तालचर (उड़ीसा) की उर्वरक संयंत्रों जैसी ही थी। उन दोनों परियोजनाओं को तो पूरा होने दिया गया लेकिन पुनः कोरबा परियोजना का कार्य सन 1975 में बंद कर दिया गया। इस अवधि में लगभग 6000 टन माल (मशीनें उपकरण) एवं अन्य सामग्री जो विदेशों से आयात की गई थी, वे निर्माण स्थल पर पहुंच चुकी थी। यह मशीनें अभी तक ज्यों की त्यों पड़ी हुई हैं। कोरबा खाद परियोजना पूर्ण होने पर आदिवासी-बाहुल्य प्रदेश का विकास होगा। इस परियोजना में कम से कम 2000 व्यक्तियों को स्थायी रूप से काम मिल सकेगा। प्रदेश शासन ने सन 1974 में 906 एकड़ भूमि भारतीय उर्वरक निगम, कोरबा को मुफ्त प्रदान की है। इसके अलावा रेलवे साइडिंग हेतु 0.59 एकड़ व्यक्तिगत भूमि अधिग्रहण कर 0.23 करोड़ रूपये प्रदान किये हैं। सन 1962 में अस्थायी कॉलोनी बंदोबस्त के लिये 29.5 एकड़ भूमि नगद भुगतान कर अधिग्रहीत की गई। भवन निर्माण पर करोड़ों रूपया व्यय किया गया है। प्रस्तावित कोरबा खाद कारखाने पर अनुमानित 80 करोड़ रूपये खर्च किये गये थे। 25 वर्षो के अंतराल के बाद वस्तुओं की कीमत 12 गुनी वृद्धि हो चुकी है, जो कि आज के दर में लगभग 1000 करोड़ रूपया पहुंच चुका है। बंद पड़ी कोरबा खाद कारखाना को पुनर्जीवित कर निर्माण कार्य आरंभ किया जाये।